THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-03 | October-2025
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI: : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.25

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन

अशोक कुमार[1] और डा० शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय[2]

[1]शोधकर्ता,असिस्टेंट प्रोफेसर (बी. एड.) जवाहर लाल नेहरू स्मारक पी. जी. कालेज,महराजगंज
[2]शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर (बी० एड०),जवाहर लाल नेहरु स्मारक पी०जी० कालेज, महराजगंज उत्तर प्रदेश

सार :- वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन आदतें एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया, एकाग्रता, निरंतर अभ्यास, लक्ष्य निर्धारण तथा आत्मविश्वास के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रभावी अध्ययन आदतें जैसे समय प्रबंधन, नियमित पुनरावृत्ति, योजनाबद्ध अध्ययन एवं आत्म–मूल्यांकन तथा उच्च स्तर की शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। इस अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया। विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें सकारात्मक एवं व्यवस्थित थीं तथा जिनमें शैक्षिक अभिप्रेरणा का स्तर उच्च था, उनकी शैक्षिक उपलब्धि तुलनात्मक रूप से अधिक पाई गई। इसके विपरीत, कमजोर अध्ययन आदतों एवं निम्न अभिप्रेरणा स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत कम रही। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा योजनाकारों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि यह विद्यार्थियों में प्रभावी अध्ययन आदतों के विकास एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जिससे उनके शैक्षिक प्रदर्शन एवं समग्र विकास को सुदृढ़ किया जा सके।

कुंजी शब्द :- माध्यमिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा

प्रस्तावना :- माध्यमिक स्तर का शैक्षिक चरण विद्यार्थियों के जीवन का वह निर्णायक काल होता है, जिसमें उनके व्यक्तित्व, मानसिक संरचना, बौद्धिक विकास, आत्मबोध, भविष्य की आकांक्षाएँ तथा जीवन–दृष्टि का व्यवस्थित निर्माण होता है। यही वह अवस्था है जहाँ वह बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसर होने के साथ–साथ शैक्षिक उत्तरदायित्व, सामाजिक अपेक्षाएँ और आत्म–निर्णय क्षमता का विकास प्रारम्भ करता है। इस स्तर पर विद्यार्थी केवल विषय–वस्तु का अधिगम नहीं करते, बल्कि वे सोचने की प्रक्रिया, समस्या समाधान कौशल, तार्किक विवेचना, आत्म–अनुशासन तथा आत्म–प्रेरणा जैसे जीवनोपयोगी गुणों को भी आत्मसात करते हैं। अतः माध्यमिक शिक्षा को केवल परीक्षा–आधारित मूल्यांकन तक सीमित न मानकर इसे एक समग्र विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है, जिसमें शैक्षिक उपलब्धि एक बहुआयामी अवधारणा के रूप में उभरकर सामने आती है। शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः अंकों, ग्रेडों या परीक्षा परिणामों के रूप में मापी जाती है, परंतु इसका वास्तविक अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक है। इसमें विद्यार्थी की बौद्धिक

क्षमता, विषय–वस्तु की समझ, संज्ञानात्मक कौशल, विश्लेषणात्मक चिंतन, रचनात्मकता, निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास, निरंतरता, लक्ष्यबोध तथा सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण सम्मिलित होते हैं। आधुनिक शैक्षिक दृष्टिकोण के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि केवल शैक्षणिक ज्ञान का संचय नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का संकेतक है। इसी कारण यह आवश्यक हो जाता है कि शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले विभिन्न मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक कारकों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए, जिससे शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, समावेशी एवं परिणामोन्मुख बनाया जा सके।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा दो ऐसे मूलभूत तत्व हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से सीखने की प्रक्रिया से जुड़े हुए हैं। अध्ययन आदत से आशय उस संगठित व्यवहार प्रणाली से है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी अध्ययन कार्य को संपन्न करता है। इसमें अध्ययन का समय निर्धारण, अध्ययन की नियमितता, विषय–वस्तु की पुनरावृत्ति, नोट्स निर्माण, पाठ्य सामग्री का संगठन, एकाग्रता, लक्ष्य निर्धारण, आत्म–मूल्यांकन तथा अध्ययन के प्रति अनुशासनात्मक दृष्टिकोण जैसे अनेक घटक सम्मिलित होते हैं। सकारात्मक एवं व्यवस्थित अध्ययन आदतें विद्यार्थियों में सीखने के प्रति स्थायित्व, धैर्य, आत्म–नियंत्रण तथा मानसिक संतुलन का विकास करती हैं, जिससे अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है। इसके विपरीत, अव्यवस्थित, अनियमित एवं असंगठित अध्ययन आदतें मानसिक भ्रम, तनाव, असफलता की भावना तथा सीखने के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को जन्म देती हैं, जो अंततः शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी के व्यवहार की वह आंतरिक शक्ति है, जो उसे सीखने, प्रयास करने, लक्ष्य प्राप्त करने और कठिनाइयों का सामना करने के लिए प्रेरित करती है। अभिप्रेरणा वह मानसिक ऊर्जा है, जो विद्यार्थी को निष्क्रियता से सक्रियता की ओर ले जाती है और उसे निरंतर प्रयासरत बनाए रखती है। शैक्षिक अभिप्रेरणा आंतरिक भी हो सकती है और बाह्य भी। आंतरिक अभिप्रेरणा में विद्यार्थी ज्ञान प्राप्ति के आनंद, जिज्ञासा, आत्म–संतोष एवं आत्म–विकास के लिए अध्ययन करता है, जबकि बाह्य अभिप्रेरणा में पुरस्कार, प्रशंसा, अंक, ग्रेड, सामाजिक स्वीकृति तथा भविष्य की उपलब्धियों जैसी बाहरी प्रेरणाएँ कार्य करती हैं। दोनों प्रकार की अभिप्रेरणाएँ शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं, किंतु आंतरिक अभिप्रेरणा का प्रभाव अधिक स्थायी एवं गहन माना जाता है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में यह देखा जा रहा है कि अनेक विद्यार्थी बौद्धिक क्षमता होने के बावजूद अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाते, जबकि कुछ विद्यार्थी औसत क्षमता के होते हुए भी उच्च शैक्षिक प्रदर्शन करते हैं। यह अंतर केवल बुद्धि या संसाधनों के कारण नहीं होता, बल्कि इसके पीछे अध्ययन आदतों की गुणवत्ता एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा का स्तर प्रमुख भूमिका निभाता है। अनेक शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि जिन विद्यार्थियों में सकारात्मक अध्ययन आदतें एवं उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा होती है, वे न केवल शैक्षिक दृष्टि से सफल होते हैं, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, भावनात्मक स्थिरता तथा सामाजिक अनुकूलन भी अधिक विकसित होता है। इसके विपरीत, कमजोर अध्ययन आदतें एवं निम्न अभिप्रेरणा स्तर विद्यार्थियों को मानसिक तनाव, हीनभावना, असफलता की आशंका तथा आत्म–संदेह की ओर ले जाती हैं, जिससे उनका शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास बाधित होता है। कुमार (2024) ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। शोध में 400 विद्यार्थियों (200 शहरी एवं 200 ग्रामीण) का चयन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं अभिप्रेरणा का स्तर अधिक पाया गया, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च रही। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि अध्ययन आदत और अभिप्रेरणा का विद्यार्थियों की उपलब्धि से सकारात्मक संबंध पाया गया। शर्मा (2024) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन किया। शोध

में 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि जिनका अध्ययन का ढंग व्यवस्थित एवं नियमित था, उनकी उपलब्धि उच्च पायी गई। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि समय प्रबंधन, पुनरावृत्ति ,वं आत्म मूल्यांकन जैसे अध्ययन आदत के तत्वों का शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सिंह (2025) ने माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में 350 विद्यार्थियों का चयन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि उच्च अभिप्रेरणा स्तर वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अधिक थी, जबकि निम्न अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि कम पायी गई। अध्ययन में अभिप्रेरणा एवं उपलब्धि के बीच उच्च धनात्मक संबंध पाया गया। यादव (2025) ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में 450 विद्यार्थियों (225 शहरी एवं 225 ग्रामीण) का चयन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं अभिप्रेरणा स्तर अधिक पाया गया, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च रही। ग्रामीण विद्यार्थियों में भावनात्मक सहयोग अधिक पाया गया। मिश्रा (2025) ने माध्यमिक स्तर के छात्राओं एवं छात्रों की अध्ययन आदत, शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में 300 विद्यार्थियों (150 छात्र एवं 150 छात्राओं) का चयन किया गया। परि.ामों से ज्ञात हुआ कि छात्राओं की अध्ययन आदत एवं अभिप्रेरणा स्तर अधिक था, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी छात्रों से उच्च पायी गई। अध्ययन में तीनों चरों के बीच सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-

समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान का संप्रेषण न होकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। इस परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक उपलब्धि को एक व्यापक अवधारणा के रूप में देखा जाता है, जिसमें संज्ञानात्मक विकास, मानसिक परिपक्वता, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक संतुलन तथा व्यक्तित्व निर्माण जैसे विविध पक्ष सम्मिलित होते हैं। माध्यमिक स्तर शिक्षा की वह महत्वपूर्ण अवस्था है, जहाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक, मानसिक एवं सामाजिक जीवन की दिशा निर्धारित होती है। इस स्तर पर प्राप्त अनुभव, आदतें एवं प्रेरणाएँ उनके भविष्य के शैक्षणिक एवं व्यावसायिक जीवन की नींव रखते हैं। अतः इस अवस्था में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा ऐसे दो प्रमुख मनो–शैक्षिक चर हैं, जो सीधे तौर पर अधिगम प्रक्रिया से जुड़े हुए हैं। प्रभावी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों को योजनाबद्ध, नियमित एवं अनुशासित ढंग से अध्ययन करने हेतु प्रेरित करती हैं, जिससे उनमें एकाग्रता, समय प्रबंधन, आत्म–नियंत्रण तथा लक्ष्यबोध का विकास होता है। इसके विपरीत, कमजोर अध्ययन आदतें भ्रम, तनाव, अनियमितता तथा असफलता की भावना को जन्म देती हैं, जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार शैक्षिक अभिप्रेरणा वह आंतरिक शक्ति है, जो विद्यार्थी को सीखने, प्रयास करने और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रेरित करती है। अभिप्रेरित विद्यार्थी न केवल अधिक परिश्रम करता है, बल्कि वह कठिनाइयों का सामना भी धैर्य एवं आत्मविश्वास के साथ करता है, जिससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि में निरंतर वृद्धि होती है।

वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि अनेक विद्यार्थी पर्याप्त बौद्धिक क्षमता एवं संसाधनों के होते हुए भी अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इसके प्रमुख कारणों में अव्यवस्थित अध्ययन आदतें, समय प्रबंधन की कमी, अध्ययन के प्रति अरुचि, मानसिक तनाव तथा निम्न अभिप्रेरणा स्तर प्रमुख हैं। बदलते सामाजिक परिवेश, तकनीकी प्रभाव, सोशल मीडिया की अधिकता, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा प्रतिस्पर्धात्मक दबाव ने विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार को जटिल बना दिया है। ऐसी परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा जैसे

कारकों का गहन अध्ययन किया जाए, जिससे विद्यार्थियों की वास्तविक समस्याओं की पहचान कर उनके समाधान हेतु प्रभावी शैक्षिक रणनीतियाँ विकसित की जा सकें। इस शोध अध्ययन का महत्व इस दृष्टि से भी है कि इसके निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा प्रशासकों को विद्यार्थियों की शैक्षिक कठिनाइयों को समझने में सहायक होंगे। शिक्षक इस अध्ययन के आधार पर शिक्षण विधियों, मूल्यांकन पद्धतियों तथा परामर्श सेवाओं में आवश्यक सुधार कर सकते हैं। अभिभावक अपने बच्चों के लिए अनुकूल अध्ययन वातावरण एवं सकारात्मक प्रेरक परिस्थितियों का निर्माण कर सकेंगे। शिक्षा योजनाकार एवं नीति–निर्माता इस अध्ययन के निष्कर्षों का उपयोग करके ऐसी नीतियाँ एवं कार्यक्रम विकसित कर सकते हैं, जो विद्यार्थियों में प्रभावी अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा को बढ़ावा दें। अतः यह अध्ययन न केवल शैक्षिक उपलब्धि को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा एक सशक्त एवं जागरूक समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। इसी कारण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं सार्थक है।

शोध समस्या कथन :- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन

प्रयुक्त शब्दो का परिभाषीकरण :-

माध्यमिक स्तर :- माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह महत्वपूर्ण चरण है, जो बाल्यावस्था और वयस्कता के मध्य स्थित एक संक्रमणकालीन अवस्था है और जिसमें विद्यार्थी न केवल शैक्षिक दृष्टि से, बल्कि मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक दृष्टि से भी तीव्र विकास करता है। सामान्यतः माध्यमिक स्तर में कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा शामिल होती है, इस स्तर का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि यहीं से विद्यार्थियों के विषय चयन, कैरियर दिशा, उच्च शिक्षा की तैयारी और जीवन–दृष्टि की नींव रखी जाती है। माध्यमिक स्तर पर प्राप्त ज्ञान केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नहीं होता, बल्कि यह विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच, विश्लेषणात्मक क्षमता, रचनात्मकता, समस्या–समाधान कौशल, और निर्णय लेने की क्षमता के विकास में सहायक होता है।

शौक्षिक उपलब्धि :- शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य उस स्तर से है जिसे कोई विद्यार्थी निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों, पाठ्यक्रम या अधिगम मानकों के अनुरूप प्राप्त करता है। यह उपलब्धि केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों या ग्रेड से ही नहीं मापी जाती, बल्कि इसमें विद्यार्थियों की ज्ञान ग्रहण क्षमता, कौशल विकास, अवधारणात्मक समझ, समस्या समाधान क्षमता, आलोचनात्मक सोच, सृजनात्मकता और अर्जित ज्ञान को जीवन में व्यावहारिक रूप से लागू करने की योग्यता भी सम्मिलित होती है। शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत प्रगति का एक महत्वपूर्ण सूचक मानी जाती है, क्योंकि यह न केवल उनके वर्तमान अध्ययन के परिणाम को दर्शाती है बल्कि भविष्य में उच्च शिक्षा व्यावसायिक सफलता और सामाजिक योगदान की संभावना का भी संकेत देती है।

अध्ययन आदत :- अध्ययन आदत से तात्पर्य उन संगठित, नियमित एवं योजनाबद्ध व्यवहारों से है, जिनके माध्यम से विद्यार्थी अध्ययन कार्य को संपन्न करता है। इसमें अध्ययन का समय निर्धारण, विषय–वस्तु की पुनरावृत्ति, एकाग्रता, नोट्स बनाना, पाठ्य सामग्री का संगठन, आत्म–मूल्यांकन तथा लक्ष्य निर्धारण जैसे तत्व सम्मिलित होते हैं। प्रभावी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों में आत्म–अनुशासन, समय प्रबंधन एवं निरंतर अभ्यास की प्रवृत्ति विकसित करती हैं, जिससे अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली बनती है। सकारात्मक अध्ययन आदतें शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक होती

हैं, जबकि अव्यवस्थित एवं नकारात्मक अध्ययन आदतें भ्रम, तनाव एवं असफलता की भावना उत्पन्न करती हैं, जो शैक्षिक प्रदर्शन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती हैं।

शैक्षिक अभिप्रेरणा :- शैक्षिक अभिप्रेरणा वह आंतरिक एवं बाह्य मानसिक शक्ति है, जो विद्यार्थी को अध्ययन करने, सीखने एवं लक्ष्य प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रेरित करती है। इसमें जिज्ञासा, रुचि, आत्म–संतोष, उपलब्धि की आकांक्षा, पुरस्कार एवं सामाजिक स्वीकृति जैसे प्रेरक तत्व सम्मिलित होते हैं। उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य एवं आत्मविश्वास के साथ प्रयास करते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। इसके विपरीत, निम्न अभिप्रेरणा स्तर विद्यार्थियों में अरुचि, पलायन प्रवृत्ति एवं असफलता का भय उत्पन्न करता है, जिससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन प्रभावित होता है।

शोध अध्ययन के उददेष्य :- प्रस्तावित शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देष्यो को निर्धारित किया गया।

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :- प्रस्तुत शोध पत्र में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध अध्ययन विधि :- प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित होगा इसलिए शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद महराजगंज के माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से कक्षा 12 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है तथा न्यादर्ष के रूप में 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :- प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने अध्ययन आदत के लिए डिम्पल रानी और एम0एल0 जैदका **द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी तथा** शैक्षिक अभिप्रेरणा के लिए के0 एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित शैक्षिक अभिप्रेरणा इन्वेन्टरी मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया है।

अध्ययन का परिसीमांकन :- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल जनपद महराजगंज तक ही सीमित है। शोध अध्ययन में केवल माध्यामिक स्तर पर अध्ययनरत् कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के विधार्थियों का ही चयन किया गया है

आंकडों का विष्लेषण एवं व्याख्या :-

परिकल्पना 1 :- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या - 1

अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

समूह	संख्या (N)	माध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
उच्च अध्ययन आदत वाले विद्यार्थी	100	72.40	8.30	4.93	(सार्थक 0.01)
निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थी	100	65.10	7.95		

व्याख्या :

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से 0.01 स्तर पर सार्थक है ($t = 4.93, p < 0.01$)। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि एकीकृत क्षेत्र के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इसलिए प्रस्तुत शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

ग्राफ संख्या 1

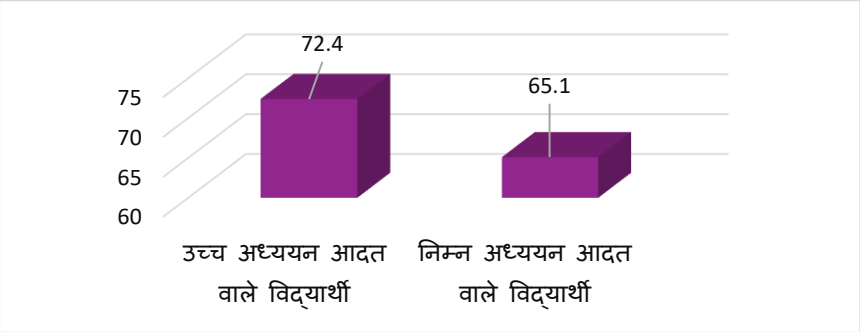

परिकल्पना 2 :- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या - 2

शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

समूह	संख्या (N)	माध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थी	100	74.60	8.50	6.30	सार्थक (0.01)
निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थी	100	67.20	8.10		

व्याख्या :

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से 0.01 स्तर पर सार्थक है ($t = 6.30, p < 0.01$)। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एकीकृत क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इसलिए प्रस्तुत शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

ग्राफ संख्या 2

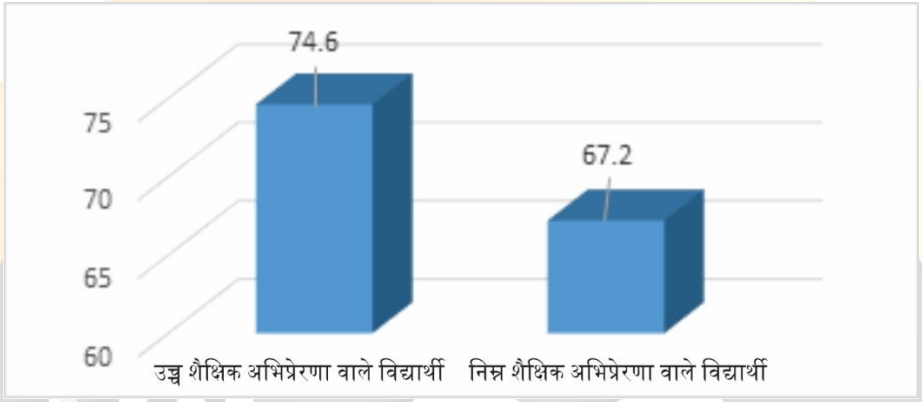

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली कारक हैं। जिन विद्यार्थियों में नियमित अध्ययन, निरंतर अभ्यास, एकाग्रता, समय का उचित प्रबंधन, आत्म–अनुशासन तथा अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया जाता है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः अधिक सुदृढ़ एवं उच्च स्तर की होती है। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों में सीखने की तीव्र जिज्ञासा, लक्ष्य प्राप्ति की प्रबल इच्छा, आत्मविश्वास, उपलब्धि की आकांक्षा, परिश्रम, लगन एवं निरंतर प्रयास की भावना विकसित होती है, वे शैक्षिक क्षेत्र में अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन करते हैं। अतः यह स्पष्ट निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सकारात्मक एवं प्रभावी अध्ययन आदतें तथा उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास, अधिगम की गुणवत्ता, शैक्षिक दक्षता एवं अकादमिक सफलता को सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं, जिससे उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि में निरंतर एवं उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- कुमार, आर. (2024). शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदत, शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 18(2), 45–58.
- मिश्रा, के. (2025). माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदत, शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय जर्नल ऑफ शैक्षिक अध्ययन, 20(1), 40–55.
- मिश्रा, एस. (2025). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. समकालीन शिक्षा समीक्षा, 11(1), 30–44.

- यादव, पी. (2025). शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन. समकालीन शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 15(2), 52–66.
- राठौर, वी. (2025). शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं मानसिक स्वास्थ्य का संबंध. जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 12(1), 28–42.
- शर्मा, एस. (2024). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन. जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी एंड रिसर्च, 12(1), 33–47.
- शुक्ला, आर. (2024). माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण. समसामयिक शिक्षा शोध, 15(2), 63–77.
- सिंह, ए. (2025). माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल साइंसेज, 9(1), 61–75.
- अग्रवाल, जे. सी. (2021). शैक्षिक मनोविज्ञान (संशोधित संस्करण). विकास पब्लिशिंग हाउस।
- भटनागर, ए. बी., एवं भटनागर, ए. (2020). आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान. आर. लाल बुक डिपो।
- मित्तल, एस. (2019). शिक्षा में अभिप्रेरणा एवं अधिगम प्रक्रिया. विनोद पुस्तक मंदिर।
- मिश्रा, एस. के. (2022). शिक्षा मनोविज्ञानरू सिद्धांत एवं अनुप्रयोग. लोकभारती प्रकाशन।
- पांडेय, आर. एस. (2020). विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें एवं शैक्षिक उपलब्धि. अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
- शुक्ला, आर. के. (2021). अभिप्रेरणा एवं अधिगम व्यवहार. चौखंबा विद्या भवन।
- सिंह, डी. पी. (2019). शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन. नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- वर्मा, पी. एल. (2022). आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

Cite this Article:

अशोक कुमार[1] और डा० शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय[2],“ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन” The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, pp.206–213

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons 1Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

अशोक कुमार और डा० शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय,

For publication of research paper title

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदत एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-03, Month October, Year-2025, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI: : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.25